*Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)*
*Vol. 3, Issue 1 - 2018*

# भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्रांतियों का योगदान

कु. ज्योति सोलंकी*, डॉ बी.एल. पाटीदार**

## प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा है। भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि से संलग्न है कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 14 प्रतिशत् योगदान है लेकिन लगातार हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान घट रहा है। सन् 1950 के दशक में हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि योगदान 53 प्रतिशत् होता था जो वर्तमान में करीब 14 प्रतिशत् रह गया है देश के नियति क्षेत्र में कृषि 10 प्रतिशत् हिस्सा है देश की 1.26 अरब आबादी की खाद्य सुरक्षा कृषि पर निर्भर है प्राथमिक क्षेत्र मे कृषि सबसे प्रधान व्यवसाय है तथा इसका राष्ट्रीय आय में सबसे बड़ा योगदान है। स्वतंत्रता के समय राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 50 प्रतिशत् से अधिक था हाल ही वर्षा में इसके योगदान में कमी आई है। वर्ष 2009–2010 में राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान लगभग 15 प्रतिशत् माना जाता है जो अन्य देशों की तुलना में देखा गया है जैसे कई देश विकास कर रहे है। तो उसके हिस्से में कृषि का योगदान कम होता जाता है। यही कारण है कि भारत में अन्य क्षेत्रों के विकास के कारण है कि भारत में अन्य क्षेत्रों कि तुलना में विकास विकास के कारण यहाँ की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र की हिस्सेदारी में लगातार गिरावट आने के कारण पिछले पॉच दशक से आंतरिक और बाहरी कारणें से समय–समय पर सरकार द्वारा कृषि नीति में बदलाव किया जा रहा है। निःसंदेश वर्तमान में भारतीय कृषि के बढ़ते हुए स्वरूप को देखा है तों उनके पीछे हमारे देश में समय–समय पर चलाए गये विभिन्न कृषि क्रांतियों की अहम् भूमिका है। 60 के दशक में पूरे भारत देश में खाद्यान्न के लिए विदेशी आयात पर निर्भर थे आजादी के बाद भारतीय कृषि में अनेक सकारात्मक और गुणात्मक परिवर्तन हुए है। कृषि उत्पादन में वृद्धि और देश के लोगों का जीवन स्तर सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से उन्नत बनाया जाता है एक ओर जहाँ हरित के जरिए खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ, वही दूसरी और श्वेत क्रांति के जरिए दुग्ध उत्पादन में देश ही नही बल्कि दुनिया में भारत सर्वाधिक दुग्ध का परचम् लहराया। हरित क्रांति और श्वेत क्रांति की सफलता के बाद देश में एक के बाद एक कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि क्रांतियों की शुरूवात की गई ये सभी कृषि क्रांतियों ने सफलता हासिल की और इन्हीं सफलता के द्वारा भविष्य की खाद्यान्नों की पूर्ति की जा सकती है। इन आकड़ों के द्वारा सन् 2030 तक 350 गिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन की आवश्यकता होगी, इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 5.5 मिलियन टन की वार्षिक दर से उत्पादन बढ़ाना होगा, देश में कृषि

*शोधार्थी, भूगोल, समाज विज्ञान अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, म.प्र.।
**शोध निर्देशक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष भूगोल, अमर शहिद चन्द्रशेखर आजाद, शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी जिला, टीकमगढ़, म.प्र.।
***Correspondence E-mail Id:*** editor@eurekajournals.com

*© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.* **ISSN: 2581-3501**

विकास कि गाथा को जानने के लिए और समझने के लिए प्रथम हरित क्रांति और श्वेत क्रांति के अतिरिक्त अन्य कृषि क्रांतियों का जैसे पीली क्रांति, गुलाबी क्रांति, नीली क्रांति, सिल्वर, सुनहरी आदि क्रांतियों का योगदान भी जानना व समझना जरूरी होगा। अतः 21वीं सदी हेतु दूसरी हरित क्रांति कृषि क्षेत्र में लाना होगा और सभी क्रांतियों में बढ़ावा देना होगा।

## शोध का उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान में हरित क्राति का विश्लेषण करना।
2. सकल घरेलू उत्पाद में कृषि के कम होते योगदान को जानना।
3. हरित क्रांतियों के कारण कृषि की संरचना में हुए परिवर्तनों तथा प्रारंभिक समय में जीडीपी की वृद्धि दर को जानना।

### अध्ययन का महत्व

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का सर्वप्रमुख व्यवसाय हैं। इसलिए भारत के आर्थिक विकास में कृषि का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा हैं। आदिकाल से कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था में जनसंख्या के भोजन और आजीविका का आधार रहा हैं। देश उद्योग–धन्धे, विदेशी व्यापार, विदेशी मुद्रा अर्जन विभिन्न योजनाओं की सफलता एवं राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर हैं भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व निम्नलिखित तथ्यों पर स्पष्ट होता हैं।

## राष्ट्रीय आय में योगदान

प्राकृतिक विशिष्टता के कारण अतीत से ही भारत कृषि प्रधान देश रहा हैं। इसलिए भारत की राष्ट्रीय आय कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान हैं। राष्ट्रीय आय से संबंधित आकड़ो से यह स्पष्ट होता हैं। 1950–51 में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं कृषि से संबंधित क्रियाओं का योगदान 56.4 प्रतिशत् था, वर्ष 2009–10 में राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान लगभग 15 प्रतिशत् था जो निम्नानुसार तालिका के माध्यम से दर्शाया गया है–

**तालिका 1.राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान**

| वर्ष | राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान |
|---|---|
| 1950–1951 | 54.40 |
| 1960–1961 | 51.3 |
| 1965–1966 | 42.7 |
| 1968–1969 | 44.4 |
| 1970–1971 | 47.5 |
| 1980–1981 | 46.0 |
| 1990–1991 | 45.1 |
| 2000–2001 | 45.0 |
| 2007–2008 | 17.6 |

**तलिका 2.सकल घरेलु उत्पाद में कृषि का योगदान**

| वर्ष | राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान प्रतिशत् में |
|---|---|
| 1951 | 52.2 |
| 1965 | 43.6 |
| 1976 | 37.4 |
| 2011 | 18.9 |
| 2012 | 18.7 |
| 2013 | 18.6 |
| 2015 | 14 |

## रोजगार की द्रष्टि से

कृषि भारतीय लोगों का प्रमुख व्यवसाय है। रोजगार प्रदान करने की द्रष्टि से अर्थव्यवस्था के अन्य सभी क्षेत्र सम्मिलत रूप से सभी कृषि क्षेत्र पीछे है। जनगणना 2001 के अनुसार देश के कुल रोजगार में कृषि का अंश लगभग 58 प्रतिशत् भाग है। कृषि क्षेत्र में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कई लोग अपनी आजीविका चलाते है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

## खाद्य आपूर्ति

कृषि देश की समस्त जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की आपूर्ति करता है। जनसंख्या के बढ़ती हुए परिपेक्ष्य में कृषि क्षेत्र पर खाद्यान्न आपूर्ति का दायित्व बढ़ता जा रहा है। जनसंख्या बढ़ने से भूमि पर आवास, परिवहन आदि के लिए भूमि की आवश्यकता पड़ रही। इसलिए कृषि क्षेत्र घट रहा है।

## व्यापार एवं परिवहन

कृषि उत्पादनों की खरीद जीवन यापन की अनिवार्यता है लोग अपनी आय का अत्यन्त प्रमुख भाग खाद्यान्नों और अन्य कृषि उत्पादनों को खरीदनें में व्यय करते है इस कारण देश के कुल आंतरिक व्यापार में कृषि उम्पादनों का महत्वपूर्ण स्थान है गॉव, कस्बों और नगरों की मंडियों में कृषि उपज की लेन देन में होने वाला व्यापार, ऐसे ही दूसरे देश में निर्यात करने के लिए परिवहन, साधनों–रेल सड़क आंतरिक नौ–वहन और परम्परागत परिवहनों साधनों को उनकी आय का अत्यन्त प्रमुख भाग कृषि उत्पादनों को ले जाने व लाने तक पहॅुचाने से प्राप्त होता है।

## अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में योगदान

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है भारत के निर्यात व्यापार में समस्त कृषि वस्तुओं का कुल योगदान लगभग 10.3 प्रतिशत् है। कृषि वस्तुओं के वश्व के कुल व्यापार में भारत का अंश लगभग 1.0 प्रतिशत् है वर्ष 2009–10 में देश के कुल निर्यात व्यापार को 10.3 प्रतिशत् भाग कृषि वस्तुओं के निर्यात का रहा है।

## कृषि क्रांतियो का योगदान

कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था होने के कारण भारत के आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र के विकास पर इसी कारण भारतीय नियोजन प्रथम में कृषि क्षेत्र के विकास पर लगातार ध्यान दिया गया है। और इसी कारण प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि विकास को वरीयता कम में सर्वोच्च समान दिया गया। खाद्य उत्पादन बढ़ती हुई मॉग और जनसंख्या बढ़ती हुई वृद्धि हुई जो खाद्यान्न पूर्ति नही कर पाया वर्ष प्रतिवर्ष मानसून की अनिश्चिता ने समस्या को अधिक गयावह कर दिया था खाद्यान्न पूर्ति के लिए आयात करना पड़ा रहा था इस समस्या को दूर करने के लिए हरित कांतियो की शुरूआत हुई। हरित कांति देश में कृषि ने हरित कांति की शुरूआत 1966–67 में हुई। इस का श्रेय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को जाता है। अमेरीका के सैन्य सलाहकार डी. सी सालन ने जापानी गेहॅू की एक थोनी प्रजाति भेजी थी। इस प्रजाति का संकरण बोरलॉग ने मैक्सिको स्थिति अनुसंधान केन्द्र में फफॅूद प्रतिरोगी गेहॅू की किस्मों परीक्षण कराया गेहॅू की अधिक उपज देने वाली प्रजातियो की प्राप्ति हुई सन् 1950 के दशक में कुल खाद्यान्न उत्पादन लगभग 50 मिलियन टन था। जो बढकर लगभग 265.04 मिलियन टन (2013–14) तक पहुच गया था या इस क्रांति का असर देश तक ही सीमित नही था बल्कि वैश्विक स्तर तक पहुच चुका है।

## श्वेत क्रांति

भारत में श्वेत क्रांति की नीव संघन पशु विकास कार्यकृम 1964–65 के तहत ही पढ़ा गया था लेकिन इसको स्ववित गति प्रदान प्रदान करने के लिए अभियान चलाया गया यह एक ग्रामिण विकास कार्यकृम था जिसको नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड [NDDP] आन्द गुजरात के द्वारा 1970 में शुभारंभ किया गया इसके सूत्राधार डॉ. वर्गीज कश्यिन ने सन् 1950 में देश का दुग्ध उत्पादन मात्र 17 मिलियन टन था जो वर्ष 2014–15 में बढकर

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-3501

लगभग 146.3 मिलियन टन हो गया देश में वर्तमान दुग्ध उत्पादन की उपलब्धता प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 322 ग्राम है।

## पीली क्रांति

देश को खाद्य तेलों से आत्मनिर्भर बनाने के लिए विकास के नये सिरे से रणनीति तैयार की गई जिसे "पीली क्रांति" के नाम से जाना जाता है। तिलहन फसलों के उत्पादन से आत्मनिर्भरता लाने के लिए प्रसंस्करण एवं प्रबंधन प्रोद्योगिकी के समुचित उपयोग के लिए तिलहन प्रोद्योगिकी मिशन सन् 1986 में शुरू किया गया।

**तालिका 3.भारत का विगत वर्षो में कुल खाद्यान्न उत्पादन का विवरण मिलियन टन में**

| क्र. | वर्ष | 1993–94 | 2003–04 | 2013–14 | 2014–15 | 2015–16 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | खाद्यान | 175.91 | 201.48 | 265.04 | 252.70 | 252.23 |
| 2. | चावल | 75.14 | 85.67 | 106.60 | 104.80 | 103.36 |
| 3 | गेहूँ | 55.55 | 71.35 | 95.80 | 88.90 | 94.04 |
| 4. | मक्का | 9.25 | 12.57 | 24.30 | 23.70 | 21.02 |
| 5. | दलहन | 13.05 | 12.78 | 19.30 | 17.20 | 17.06 |
| 6. | तिलहन | 19.15 | 19.97 | 32.70 | 26.70 | 25.90 |
| 7. | कपास | 10.62 | 15.38 | 34.20 | 35.50 | 30.52 |
| 8. | गन्ना | 235.66 | 282.75 | 341.20 | 359.30 | 346.72 |
| 9. | आलू | 15.30 | 23.47 | 45.30 | 44.90 | 46.00 |

## इन्द्रधनुषी क्रांति

21वीं सदी में देश की बढ़ती जनसंख्या को गद्देनजर रखते हुए वर्ष 2000 में एक नई राष्ट्रीय कृषि नीति को तैयार कर इस कृषि नीति के तहत जोड दिया गया जिसके कारण देश के समुचे कृषि उत्पादों को आगामी वर्षो में दो गुना किया जा सके तथा खाद्यान्न की उत्पादन दर को 4 फीसादी वार्षिक वृद्धि तक निर्धारित किया जा सकता है। इस नई कृषि नीति को ही इन्द्रधनुष क्रांति के रूप में शुरू किया गया है। इस क्रांति का आशय यह है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देश में विभिन्न क्रांतियों को एक साथ लेकर चलना होगा जिसे इन्द्रधनुषी सतरंगी क्रांति की संज्ञा दी गई है। जिसके उद्देश्य आने वाले समय में देश को भारी मात्रा में खाद्यान्न, फल, सब्जी, दूध आदि की आवश्यकता पडेगी जिसकी पूर्ति करने के लिए इन्द्रधनुषी सतरंगी क्रांति की शुरूवात कि गई है।

कृषि में दूसरी हरित क्रांति देश में कृषि उत्पादन हेतु प्रथम हरित क्रांति (1966–67) में गेहूँ, चावल, मक्का को उन्नत् प्रजातियाँ, उर्वरको का प्रयोग आदि फसलों में उपज देखने को मिलती है। डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन (पूर्व डी.जी नई दिल्ली) भारत में हरित क्रांति के जनक कृषि वैज्ञानिक द्वारा ऐसा कुट संकेत के रूप में दिया है कि पर्यावरण सुरक्षा को प्रोत्साहन देना अनिवार्य है। "यूनाइटेड नेशन्स सस्टेनेबिल डेव्लपमेंट गोल्स' के द्वारा दिशा निर्देशों से आर्थिक विकास और पर्यावरण सुनिश्चितता प्राप्त करने के लिए "शोल–2 को अपनाना होगा। जिससे भुखमरी का अंत करना खाद्य सुरक्षा व सुनिश्चितता प्राप्त करना एव पोषण गुणवत्ता मे सुधार लाना और सम–गतिशील खेती, सतत्, वृद्धि, कृषि को प्रोतसाहित करना। अंत में देख सकते है कि प्रगति से गरीबी दूर हुई एवं गरीब की इच्छापूर्ति हुई अथवा नही, यदी हुई हो तो तभी यह शोल–2 संभव माना जायेगा।

*© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.* **ISSN: 2581-3501**

## शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में द्वितियक संमक का प्रयोग किया गया है इसके लिए समाचार पत्रों, शोध जर्नल आदि आकड़ों का संकलन किया गया है।

## निष्कर्ष

हमारे देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं कृषि से संबंधित क्षेत्रों का योगदान लगभग 13–14 प्रतिशत् है। आज से 65 वर्ष पूर्व पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ठीक ही कहा था कि प्रत्येक चीज इंतजार कर सकती है परन्तु कृषि नही। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला है देश की 50 प्रतिशत जनसंख्या कृषि से संलग्न है जिनकी जीविकोपार्जन का साधन कृषि है, कृषि हमारी संस्कृति और जीवनशैली का आईना है। देश के कुल निर्यात में 16 प्रतिशत् कृषि का योगदान रहा है। भारत में कृषि उत्पादन लगातार बढता जा रहा है तथा सरकार कि ओर से चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की बदोलत किसान भरपूर मात्रा में अनाज, सब्जी आदि का उत्पादन कर रहा है।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1]. तिवारी आर.सी., सिंह बी.एन. "कृषि भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहबाद।
[2]. डॉ.शर्मा श्री कमल "कृषि भूगोल" मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
[3]. छुबे रमेश कुमार "हरित क्रांति के असंतुलन दूर करने के उपाय ग्रामीण विकास मंत्रालय की प्रमुख मासिक पत्रिका, जुलाई।
[4]. डॉ. सिंह जितेन्द्र प्रतियोगिता दर्पण, जुलाई।
[5]. प्रो. मोदी कृष्णमुरारी कुरूक्षेत्र, फरवरी 2009.
[6]. प्रो. एस.एन.लाल, डॉ. एस.के. लाल भारतीय अर्थव्यवस्था शिवम् पब्लिशर्स हाउस, इलाहबाद।
[7]. क्रानिकल भारतीय अर्थव्यवस्था की मूल अवधारणाएँ, मई 2016.
[8]. गिल ओ.पी. योजना भारतीय कृषि, जून 2014.
[9]. सिंह मलिक जगपाल बढता कृषि उत्पादक एक अवलोकन कुरूक्षेत्र, जून 2013.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501